



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रकृति प्रेमी—शकुंतला

डॉ. जया शुक्ला

अतिथि व्याख्याता

संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

प्रस्तावना :— जहाँ मानवीय भावना, युग चित्रण, जन कल्याण की सत् तथा सुन्दर अभिव्यक्ति हो वहीं साहित्य बनता है। संस्कृत साहित्य में जीवन के आदर्श स्फुरित हुए हैं, जो मानवता को दानवता की भावना से मुक्त करके देवत्व की ओर अग्रसर कराता है। राष्ट्र के आध्यात्मिक, अधिभौतिक, चारित्रिक निर्माण के लिए एवं निरन्तर उस मार्ग पर प्रगति पथ पर चलते रहने के लिए साहित्य होना चाहिए। महाकवि कालिदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्पूर्ण भारत, भारत साहित्य ही आलोकित नहीं हुआ वरन् सम्पूर्ण विश्व भी उनके काव्य-दर्शन से प्रभावित है।

कालिदास के साहित्य में, काव्य में अधिभौतिक, आध्यात्मिक, कलात्मक, लोककल्याणात्मक कोई भी संस्कृति का क्षेत्र लें, उनकी उदात्तता निश्चित ही परिलक्षित होती है। महाकवि कालिदास ने कल्पना प्रसूत ऊर्जस्विता को, आशाओं को, आकांक्षाओं को भावनाओं को आदर्श प्रतीक रूप में पात्रों में चित्रित किया है। कालिदास की प्रतिभा, कल्पनाशक्ति की उर्वरता, उनके कवित्व की कोमलता एवं प्रखरता, नाट्य कुशलता के अनेक मार्मिक प्रसंग अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मिलते हैं। कालिदास उदात्त प्रेम का असाधारण वर्णन करते हैं। वह शकुन्तला का प्रकृति के प्रति हो या दुष्यन्त के प्रति हो या कण्व के प्रति हो या सखियों के प्रति हो वह वास्तविक प्रेम है।

प्रकृति प्रेम :— अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कालिदास ने प्रकृति को सजीव व मानवीय भावनाओं से उसका तादात्म्य स्थापित कराया वह अनूठा है। हर सहृदय को अल्हादित कर देता है। शकुन्तला का वृक्षसिंचन करते हुए यह कथन :—“ न केवलं तातनियोग एव। अस्ति में सोदरस्नेहोऽप्येतेषु।” यहाँ पिता के प्रति आदर भी है, आज्ञाकारिता भी है। मेरा भी इन वृक्षों पर सगे भाई के तुल्य प्रेम है, यह शकुन्तला का प्रकृति के प्रति प्रेम की उदात्तता है, पराकाष्ठा है। शकुन्तला वृक्षों को मित्ररूप

में देखती है, अनसूया का यह कथन— 'हला शकुन्तले, इयं स्वयंवरवधूः सहकारस्य त्वया कृत नामधेया वनज्योत्स्नेति नवमालिका। एनां विस्मृतासि।'² वह शकुन्तला प्रेमवश नवमालिका का वन ज्योत्स्ना नामकरण करती है और अनसूया के कहने पर कि क्या इसे भूल गई कह उठती है— 'तदात्मानमपि विस्मारिष्यामि।'³ अगर मैं इस वनज्योत्स्ना को भूली तब अपने आपको भी भूल जाऊँगी। वह तपोवन के वृक्षों को भूलती नहीं है, अनन्य प्रेम करती है। तपोवन के वृक्षों के प्रति शकुन्तला की संवेदनशोलता अथाह है, काश्यप ऋषि भी इससे अनभिज्ञ नहीं है, तभी तो वे स्वयं शकुन्तला की विदाई से दुःखित हो रहे हैं और वृक्षों से ही मार्मिक वाणी में कह उठते हैं—

“पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या

नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।

आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः

सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।।”⁴

वह शकुन्तला जो तुमको (तपोवन के वृक्षों) पहले जल पिलाती थी, फिर स्वयं जल पीती थी, अलंकृत होना उसे प्रिय था, किन्तु अलंकारों के लिए तुम्हारे पल्लव नहीं तोड़ती थी, पुष्पोद्गम का समय उसके लिए उत्सव होता था, ऐसी शकुन्तला अब पतिगृह जा रही है। यहाँ वृक्षों के प्रति भ्रातृ-व्यवहार प्रकट हो रहा है। और भी 'वनवासबन्धुभिः'⁵ तपोवन के साथी या बन्धु कहकर मानवीयकरण कर उदात्तता को रूपित किया है। शकुन्तला का प्रकृति प्रेम जितना अनूठा है, उस पराकाष्ठा की कवि ने जो कल्पना की वह स्नेह, प्रेम को प्रभावशील बना गई सहृदय अनायास ही कल्पना को वास्तविक सत्य समझकर भावविभोर हो जाता है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में पग-पग पर वृक्ष, पशु, पक्षी का मानवीयकरण किया गया है। प्रियंवदा का कथन कि तुम शकुन्तला तपोवन के वियोग में अकेले ही दुःखी नहीं वरन् तपोवन के सभी पशु, पक्षी, वृक्ष भी दुःखी हैं, तभी वे ऐसा आचरण कर रहे हैं :-

“उद्गालितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।

अपसृतपाण्डुपत्रा मृच्चन्त्यश्रुणीव लताः।”⁶

करुणामयी शकुन्तला सबको स्मरण कर सबसे मिल रही है, तभी वह बहिन के रूप में मानती हुई वनज्योत्स्ना से मिलने की स्वीकृति पिता से माँगती है :- “तात्, लताभगिनों वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रयिष्ये।”⁷ काश्यप भी जानते हैं कि शकुन्तला वनज्योत्स्ना को बहिन की तरह प्रेम करती है। ऐसी उदात्त भावनाओं में सहृदय बहता जाता है तभी शकुन्तला का कथन— “(सख्यौ प्रति) हला, एषा द्वयोर्युवयोर्हस्ते निक्षेपः।”⁸ कि मैं जा रही हूँ और तुम दोनों सखी इस नवमालिका

को सम्हालना। यह कथन ममतामयी माँ का ही है, व्यवहार व समाज में देखा गया है कि किन्हीं परिस्थितियों के वशाभूत किसी माँ को अपने अपत्य को छोड़कर जाना पड़ता है, उस समय वह माँ किसी अपने विश्वासपात्र को ही अपनी संतान को सम्हालने का दायित्व सौंपता है, वही अनुभूति इस कथन में हो रही है। तपोवन में स्थित वृक्ष भी शकुन्तला के ममत्व को प्राप्त कर प्रेम की पराकाष्ठा तक पहुँचा देता है। शकुन्तला का स्नेह निश्चय ही आत्मीयजन की तरह है वह हर वृक्ष को पल्लवित देखना चाहती है, विशषकर नवमालिका को।

वृक्षों का ही नहीं तपोवन के पशु पक्षी के प्रति उसका कारुण्य, प्रेम महान है। मृगी को सन्तानोत्पत्ति हो जाने पर सूचित करें, ऐसी विनती भी पिता काश्यप से करती है :-

“तात, एषोटजपर्यन्तचारिणी गर्भमन्थरा मृगवधूर्यदाऽनघप्रसवा भवति, तदा मह्यं कमपि प्रियानवेदयितृकं विसर्जयिष्यथ।”⁹

शकुन्तला ऋषिकन्या है, ऋषिपुत्री है, ऋषि के द्वारा पालित है, तपोवन में पली बड़ी हुई ह तो निश्चित रूप से मनुष्य के साथ-साथ पशु, पक्षी के प्रति अत्यन्त भावुक व संवेदनशील होना स्वाभाविक है। मूक पशु भी प्रेम की भाषा समझते हैं, शकुन्तला के अपनत्व का, प्रेम का प्रत्युत्तर भी देते हैं। शकुन्तला को विदाई के अवसर पर मृग जिसकी परिचर्या कर घावों को शकुन्तला ने भरा एवं उसका पुत्रवत् पालन करने वाली शकुन्तला को वह प्रेमवश वस्त्र खींच कर रोक रहा है मानो वह मानव पुत्र ही है :- “को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते। इति परावर्तते।”¹⁰ वह मृग शकुन्तला को रोक रहा है तब पिता काश्यप उस मृग के विषय में बताते हैं :-

“यस्य त्वया व्रणाविरोपण मिङ्गदीनां

तैलं न्यषिच्यत मुख कुशसूचिविद्धे।

श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति

सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते।”¹¹

उस मृग को प्रेमवश शकुन्तला असहाय न छोड़कर अपन पिता को पालने के लिए कहती है- “वत्स, किं सहवास परित्यागिनीं मामनुसरसि। अचिर प्रसूतया जनन्या विना वर्धित एव। इदानीमपि मया विरहितं त्वां तातश्चिन्तयिष्याति। निवर्तस्व तावत्।”¹² शाकुन्तलम् में शकुन्तला के चरित्र में वृक्ष, पशु, पक्षी आदि के प्रति उदात्त, महान संवेदनशीलता की पराकाष्ठा निश्चय ही उत्कृष्ट है।

शकुन्तला की विदाई अवसर पर आश्रम के समस्त व्यक्ति, पशु, पक्षी वृक्षादि दुःखी हैं, खिन्न हैं। वृक्ष व वनदेवता शकुन्तला के प्रति प्रेम प्रकट करते हुए उसे रेशमी वस्त्र, अलक्तक, आभूषण देते हैं :-

“क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यभाविष्कृतं

निष्ठयूतश्चरणोप रागसुभगो लाक्षारसः केनचित् ।

अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितै

र्दत्तान्याभरणानि नः किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्दिभिः ।”¹³

वृक्षों से फूल चुनकर लाने वाले ऋषिकुमार हाथों में रेशमी वस्त्र, आभूषण लाक्षारस लाते हैं जो कि वनदेवता व वृक्षों के द्वारा शकुन्तला को विदाई में भेंट स्वरूप दिए गए हैं। वनदेवता के हाथों से आभूषणों का मिलना उनका शकुन्तला के प्रति प्रेम व सौभाग्य का सूचक है। वनस्पतियों का यह अनुग्रह शकुन्तला का उनके प्रति घनिष्ठ प्रेम का प्रत्युत्तर है।

उपसंहार :- इस तरह शकुन्तला का प्रकृति के प्रति समर्पित व घनिष्ठ प्रेम प्रत्यक्ष रूप से कालिदास की कृति अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दृष्टिोचर होता है। शकुन्तला की प्रकृति के प्रति एवं प्रकृति की शकुन्तला के प्रति सहृदयता का ही परिचय है। प्रकृति को सजीव एवं मानवीय भावनाओं से ओतप्रोत कर मनुष्य के तल्य सुख-दुःख की अनुभूति कराने में कालिदास अत्यन्त सफल हैं और यही सफलता उनको सर्वश्रेष्ठ कवि, नाटककार के रूप में स्थापित करती है।

संदर्भ सूची :-

- | | |
|-----------------------------------|------------------------------------|
| 1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – पृष्ठ 42 | 10. अभिज्ञानशाकुन्तलम् पृष्ठ – 221 |
| 2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – पृष्ठ 51 | 11. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – 4-14 |
| 3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – पृष्ठ 52 | 12. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – पृष्ठ 223 |
| 4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – 4-9 | 13. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – 4-5 |
| 5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – 4-10 | |
| 6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – 4-12 | |
| 7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – पृष्ठ 219 | |
| 8. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – पृष्ठ 221 | |
| 9. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – पृष्ठ 221 | |